नेतागिरी का यही तो लाभ है

स्थानीय भाजपा विधायक विपुल गोयल के साथ हर मंच पर सट कर बैठने वाले भाजपा मण्डल अध्यक्ष ललित सैनी द्वारा किया जा रहा अवैध कब्जा एवं निर्माण

फ़रीदाबाद (म.मो.) । मैगपाई के ठीक सामने स्थित इस जमीन का हुड्डा से करोड़ो रूपए बतौर मुआवजा वसूल कर चुका सैनी, उसके बावजूद वह इस जमीन पर अवैध कब्जा करके भवन निर्माण कर रहा है। इस बाबत सुप्रसिद्ध समाजसेवी एवं आरटीआई कार्यकर्ता वरूण श्योकंद ने जब फोन पर हुड्डा के एसडीओ सर्वे रामकिशन तंवर को सूचित किया और पूछा कि वे इस पर कार्यवाही क्यों नहीं करते तो एसडीओ ने कहा कि उन्होंने अपने जेई को भेजा था जो काम को रूकवा आया है। वरूण ने जब कहा कि काम रूका नहीं है, ज्यों का त्यों चल रहा है, आप इसे रूकवाने की बजाये तोड़ते क्यों नहीं तो एसडीओ साहब ने उलटे वरूण से ही उनका परिचय मांगना शुरू कर दिया। जाहिर है इस मामले में न केवल एसडीओ बल्कि तमाम उच्चाधिकारियों की मिलीभगत है। एक बार भवन निर्माण हो जाने के बाद यही अधिकारी उसे अदालत से स्टे दिलवाने व मुकदमा जीतने में पूरा सहयोग करेंगे।

इस देश से दो तरह की दुकानें हर हालत में
बंद होनी चाहिए
एक "पब्लिक स्कूल" नाम की दुकान
और
दूसरी "नर्सिंग होम या क्लिनिक"
नाम की दुकान

ये दो ऐसे धंधे हैं जहाँ Payment काम से पहले होती है
और Negotiation का तो मतलब ही नहीं
इसीलिए बड़े-बड़े व्यापारियों ने ये दुकानें खोल रखी हैं
जहाँ एक पैसे का लिहाज नहीं किया जाता

सिर्फ और सिर्फ एक ही विकल्प हो
सरकारी अस्पताल | सरकारी स्कूल

क्या आप सहमत हैं? कमेंट अवश्य करें।

फार्म संख्या-2

घोषणा पत्र-नियम 3 देखें

मै सतीश कुमार, पुत्र स्वर्गीय श्री निरंजन सिंह एतद् घोषित करता हूं कि मैं ''मज़दूर मोर्चा'' पाक्षिक पत्र का स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक और सम्पादक हूं जिसे 1/डी 2 बी.पी. नियर हार्डवेयर चौक, एनआईटी फ़ररीदाबाद से प्रकाशित किया गया है। तथा उक्त समाचार पत्र के सम्बंध में जो विवरण नीचे दिया गया है, वह मेरी जानकारी और विश्वास के अनुससार सत्य है-

1.	समाचार पत्र का नाम	मज़दूर मोर्चा
2.	पत्र की भाषा	हिन्दी
3.	प्रकाशन की अवधिकता	पाक्षिक
4.	समाचार पत्र का खुदरा बिक्री मूल्य	2 रु.(दो रुपये)
5.	प्रकाशक का नाम राष्ट्रीयता	सतीश कुमार भारतीय
6.	पता प्रकाशन का स्थान	1डी/ 2बी.पी. नियर हार्डवेयर चौक, एनआईटी फ़रीदाबाद 1डी/ 2 बी.पी. नियर हार्डवेयर चौक, एनआईटी फ़रीदाबाद
7.	मुद्रक का नाम राष्ट्रीयता पता	सतीश कुमार भारतीय 1डी/ 2बी.पी. नियर हार्डवेयर चौक, एन आईटी फ़ारदाबाद
8.	उन मुद्रण प्रेसों का नाम जहां मुद्रण कार्य किया जाता हो तथा उन परिसर/ परिसरों का सही विस्तृत विवरण जिसमें प्रेस लगा हो-	नीलू प्रिंटिंग प्रैस प्लाट नं-3/1, टीसीसी काम्पलैक्स, सैक्टर-10 फरीदाबाद
	प्रकाशक का नाम पता नागरिकता	सतीश कुमार 1डी/2बी.पी.नियर हार्डवेयर चौक, एनआईटी फ़रीदाबाद भारतीय

न्यूयॉर्क में दलित, दिल्ली में 'ब्राह्मण'

- याशिका दत्त

दिल्ली में मैंने दस साल बिताए. उन दस सालों में मैंने कॉलेज पूरा किया, एडवरटाइजिंग में नौकरी की और कई पत्रिकाओं और अख़बारों में काम किया. उस वक्त मैं बस राजस्थान की एक लड़की थी. मेरे पिताजी एक्साइज़ ऑफ़सि में थे, मैं बढ़िया इंग्लिश में बात करती थी और अपने ऑफ़सि की बाक़ी लड़कियों की तरह दिखती और चलती थी. मैं उन बाक़ी लड़कियां में से एक थी, जो दिखने में ऊंची जाति और अच्छे घर से लगती थीं. दिल्ली में उन दस सालों में मैंने बहुत कुछ देखा, सुना और किया. मैंने हर दूसरी रात मूलचंद पर परांठे खाए, हर महीने के अंतिम रविवार को सरोजिनी नगर की ख़ाक छानी और लगभग हर सप्ताहांत में हौज़ ख़ास गांव जाने के लिए ऑटो वालों से लड़ते हुए बिताया.

मैंने दिल्ली में बस एक चीज़ नहीं की. मैंने किसी को यह नहीं बताया कि मैं दलित हूँ।

मैंने किसी को यह बताना चाहा भी नहीं. क्या फ़ायदा होता? कुछ क़रीबी दोस्तों के अलावा, बाक़ी सब आपस में बातें करते, तुम्हें पता है याशिका एससी है? यार, लगती तो बिलकुल नहीं है. कुछ लोग ऑफीस में बोलते, भाई, इन लोगों का क्या है? ये तो सरकार के दामाद हैं... इन्हें बस एग्ज़ाम में बैठना होता है, पास तो अपने आप ही हो जाते हैं, मेहनत तो बस आप-हम जैसे लोगों को करनी पड़ती है, क्यों?

इस तरह, मैं उनमें में से एक न होकर इन लोग हो जाती. लगभग हर कोई मेरी क़ाबिलियत पर चर्चा कर रहा होता. मेरे चार साल में तीन प्रमोशन, देर तक ऑफीस में रह कर काम ख़त्म करना और मेरी कहानियां, जो सोशल मीडिया पर हज़ारों लाइक्स और शेयर्स पाती हैं, शायद किसी को नज़र नहीं आतीं. फिर भी जब वो उन्हें नज़रअंदाज़ नहीं कर पाते तो शायद कहते, अच्छा! कोलंबिया जर्नलिज्म स्कूल से है और दलित है!

मैंने सुना था कि जिस नोट में मैंने पहली बार अपने दलित होने की बात की थी, उसके सोशल मीडिया पर शेयर होने के बाद एक पत्रकार ने कुछ ऐसी ही प्रतिक्रिया दी थी।

ऐसा लगता है कि दोनों बातें एक साथ होना नामुमकिन है और दलित घर में पैदा होते ही इंसान की क़ाबिलियत मर जाती है. मानो एक दलित लड़की का दुनिया की सबसे प्रतिष्ठित विश्वविद्यालयों में से एक में पढ़ना कोई अजूबा था।

अगर मैं दिल्ली के उन दस सालों में पूछने वालों को यह नहीं बोलती कि मैं ब्राह्मण हूं, तो लाजपत नगर में किराये का वो मकान जिसमें मैं सात साल रही, उसमें मुझे कोई छह महीने भी नहीं रहने देता. मैं छह महीने भी तब रह पाती जब दलित लड़की को घर देने के लिए कोई तैयार होता।

वैसे मेरे मकान मालिक ने कभी पूछा भी नहीं, क्योंकि इसकी ज़रुरत ही नहीं पड़ी. मैं दिखने में %दूसरी जाति% की जो लगती थी. उन्होंने खुद ही अंदाज़ा लगा लिया (शायद मेरे रंग, मेरी अच्छी नौकरी और मेरी दबंगई को देखकर) कि मैं दलित तो हो ही नहीं सकती।

सारे दलित मानो इंसान न होकर जानवरों की एक नई प्रजाति हो गए, सब एक जैसे दिखते हैं या फिर जैसे दूसरी जाति की तरह दिखना, दलित दिखने से बेहतर है।

मगर हमारे समाज के लिए वही बेहतर है. अगर नहीं होता तो मुझे हर वक़्त इस बात का एहसास न होता कि मैं कितनी भाग्यशाली हूं, जो सफाई देकर अपनी जाति छुपा सकती हूं।

मैं हर तरह के दोस्त बना सकती हूं, जिन्हें दलित से भेदभाव नहीं, वो भी, और जो हमें देखने भर के बाद नहाना पसंद करते हैं, वो भी। मुझे मिलने पर हर कोई मुझे मेरे दम पर आंकेगा, मेरी जाति के दम पर नहीं।

पर क्या मैं अपना नोट दिल्ली में रहकर काम करते हुए लिख पाती? क्या मैं इतनी बेबाक होकर यह कह पाती कि मैं दलित हूँ? शायद नहीं। दिल्ली में जो राज़ मैंने इतने साल अपने पास छुपाये रखा, उसको अचानक खोल देना मेरे लिए मुश्क़िल होता, शायद नामुमकिन भी।

यहां न्यूयॉर्क में उस भेद का कोई मोल नहीं रहा. कम से कम, मेरी रोज़ाना ज़िन्दगी में तो नहीं।

यहां क़रीब दो साल से न मुझसे किसी ने मेरी जाति पूछी न मुझे झूठ बोलने पर मजबूर किया। इसलिए तो उस झूठ की ज़रुरत भी अपने आप ख़त्म हो गई. जाति छुपाना मेरे लिए अब उतनी बड़ी बात नहीं रही, जितनी दिल्ली में थी। अब खुल कर बाहर आना मेरी लिए आसान है और रोहित वेमुला की मौत के बाद ज़रूरी हो गया।

क़ाश वो शहर जिससे मुझे बचपन में ही प्यार हो गया था, जहां मैंने सब कुछ सीखा और जिसने मुझे इतना कुछ दिया, वो मुझे मैं होने की आज़ादी भी दे पाता।

तुर्की-ब-तुर्की / रोहित की आत्महत्या पर राजनीति!

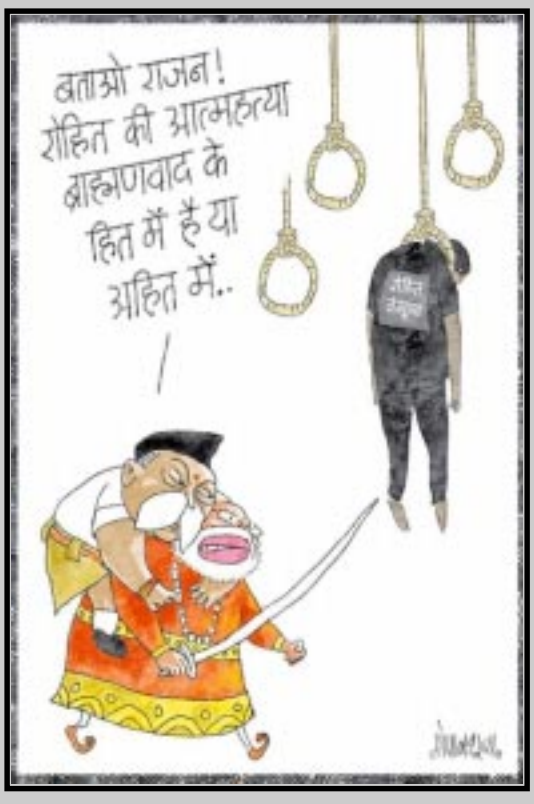

''आखिर वह भी किसी मां का लाल था। उसे आत्महत्या पर मजबूर किया गया।'' (हैदराबाद केन्द्रीय वि.विद्यालय के दलित छात्र रोहित वेमुला की आत्महत्या पर मोदी का भावुक कथन)

''हमारा कहना है-

मोदी जी आप इतने भावुक भी हुए और फ़िर भी आपके विरोधियों ने इसे नाटक ही बताया। क्या ही अच्छा होता कि रोहित को आत्महत्या के लिये मजबूर करने वालों को आपकी सरकार ने तुरन्त दंडित कर दिया होता। इससे लोग़ों को बातें बनाने का मौका न मिलता।

कहीं ऐसा तो नहीं कि आप अभी तक स्वयं को मनमोहन सिंह से एकदम विपरीत सिद्ध करने में लगे हुए हैं? वे पूरी तरह चुप रहकर कुछ थोड़ा-बहुत कर देते थे। आप बोल-बोल कर भी कुछ नहीं करते। वे न बजने वाले शंख थे और आप ढपोर शंख। यही वजह है कि रोहित के मामले में आपने और आपकी पार्टी ने जुमले तो दुनिया भर के कह डाले पर करने के नाम पर कुछ नहीं।

आप कुछ कर पाने की स्थिति में हैं भी मोदी जी? आपके दो-दो मंत्री और उसमें भी खासमखास स्मृति ईरानी, का रोहित को आत्महत्या के कगार पर पहुंचाने में बड़ा हाथ था। क्या आप इस स्थिति में हैं कि उनके विरुद्ध कार्यवाही कर सकें? विशेषकर जब मोहन भागवत और उनका राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ स्वयं देश में दलित विरोधी भावनाओं को भड़का रहा हो। आपकी स्थिति वही राजा विक्रमादित्य वाली ही तो है जिसके कंधे पर मोहन भागवत बेताल बन कर बैठा हुआ है। उस बेताल को आपकी जीडीपी आधारित विकास की कहानियों में दिलचस्पी नहीं है। इसे तो उत्पीड़न और घृणा पर आधारित हिन्दुत्ववादी विकास चाहिये, भले ही देश के टुकड़े हो जायें और आतंकवाद समाज में पसर जाय।

मोदी जी क्या आपको नज़र नहीं आता कि रोहित वेमुला और मोहन भागवत एक ही भारत माता की सन्तान नहीं हो सकते। आपको आज नहीं तो कल दोनों में से एक को चुनना होगा। प्रतीक्षा रहेगी।